International Journal of Education and Science Research Review
Volume-12, Issue-2 March-April-2025 E-ISSN 2348-6457
( Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.in Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.in

# भामती : एक अवलोकन

**शोधार्थी–राजीव कुमार**

**शोध निर्देशक–प्रो० (डॉ.) इन्दुधर झा**

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

उषाकिरण खानक 'भामती' मैथिली साहित्यक एकटा प्रतिष्ठित उपन्यास थिक। उपन्यासमे भामती ओ वाचस्पति मिश्र नामक ऐतिहासिक पात्रक माध्यमे त्याग, प्रेम, बौद्धिक साधना एवं स्त्री– सहभागिताक वर्णन भेल अछि। उपन्यासक कथानक प्रसिद्ध दार्शनिक वाचस्पति मिश्र आ हुनक पत्नी भामतीक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि। एत भामती केवल पतिव्रता स्त्री नहि, बल्कि ज्ञान–साधनाक सहयोगी, धैर्यशाली सहचरी आ आन्तरिक शक्ति–स्रोत रूपेँ उपस्थित छथि।

प्रस्तुत शोध–आलेख मैथिलीक प्रतिष्ठित उपन्यासकार उषाकिरण खानक साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त उपन्यास 'भामती'क समग्र अवलोकन अछि। ई नवम–दशम शताब्दीक मिथिलाक पृष्ठभूमिमे लिखल एकटा ऐतिहासिक–सामाजिक उपन्यास अछि, जाहिमे महापंडित वाचस्पति मिश्रक जीवन, हिनकर अठारह वर्षक दीर्घ साधनामे रचित 'भामती टीका' आ हुनक पत्नी भामतीक मौन समर्पणक कथा कहल गेल अछि। एहि आलेखमे उपन्यासक कथानक, चरित्र –चित्रण, स्त्री–विमर्शक दृष्टि, ऐतिहासिक आधार, भाषा शैली आ मिथिलाक सामाजिक–सांस्कृतिक चित्रणक बहुआयामिक विश्लेषण कएल गेल अछि। 'भामती' केवल एकटा अविस्मरणीय प्रेमकथा नहि, अपितु मैथिली उपन्यास–परम्परामे नारीक स्थिति, ज्ञान–अधिकार आ समर्पणक मूल्यकेँ चित्रित करैत एहि युगक–दस्तावेज अछि।

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालमे उपन्यास विधा महत्वपूर्ण स्थान धारण करैत अछि। ई विधा सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आ दार्शनिक विषयकेँ गहराई संग चित्रित करैत अछि। मैथिली साहित्यमे उपन्यासक यात्रा उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ आरम्भ भ' क' क्रमशः समृद्ध होइत गेल अछि। समाज–सुधारक युगसँ ल' क' मनोविश्लेषणात्मक आ प्रगतिवादी कथा–लेखन धरि मैथिली उपन्यास अपन–अपन लक्षण बनौने रहल अछि। एहि समृद्ध परपरामे उषाकिरण खान अपन विशिष्ट स्थान रखैत छथि। उपन्यासकार प्राचीन इतिहास आ पूरातत्त्वमे एम.ए. छथि। इतिहास आ साहित्यक संगम पर खड़ा हो क' रचना करैत छथि–ओहि के साक्षी छैक हिनकर उपन्यास 'भामती'।[1]

## लेखिका परिचय

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालमे उषा किरण खानक नाम अत्यंत आदरक संग लेल जाइत अछि। ओ मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे साहित्य सृजन केलनि तथा अपन लेखनीक माध्यमसँ मिथिलाक सांस्कृतिक विरासतकेँ विश्व पटल पर प्रतिष्ठित केलनि। उषाकिरण खान अपन जीवन कालमे मैथिली साहित्यकेँ अनेक अमूल्य रचना प्रदान केलनि। ओ मगध विश्वविद्यालयक अंगीभूत कालेजसँ प्राचीन भारतीय इतिहास विभागक विभागाध्यक्ष पदसँ 2005 मे सेवानिवृत भेलीह।[2] लेखिका समकालीन भारतीय नारी–जीवन, इतिहास, संस्कृति आ सामाजिक विसंगति पर लेखन करैत छलीह। हुनक उपन्यास 'भामती' मे मिथिलाक लोकजीवन, इतिहास आ सांस्कृतिक विरासतक जीवन्त चित्रण भेल अछि। हुनक लेखनमे नारी–समर्पण, पितृसत्ता आ दार्शनिक गहराईक सुंदर मिश्रण देखल जाइत अछि।

'भामती' शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भेल, जकर प्रथम संस्करण दिसम्बर 2010 आ द्वितीय संस्करण दिसंबर 2017 मे भेल।[3] उपन्यासक उपशीर्षक अछि–'अविस्मरणीय प्रेमकथा'–मुदा ई केवल प्रेमकथाक भाग नहि अछि, ई मिथिलाक नवम–दशम शताब्दीक समाज, दर्शन–परम्परा, बौद्ध सनातन संघर्ष आ नारीक ज्ञान–स्वतंत्रताक प्रश्नकेँ उठबैत एकटा बृहत् महाकाव्यात्मक कृति अछि।

## उपन्यासक विषय–वस्तु आ कथानक

उपन्यासक कथा सूत्र महापंडित वाचस्पति मिश्र (9म –10म शताब्दी) छथि, जे भारतीय दर्शन परंपरामे अद्वैत वेदान्तक महान टीकाकार छलाह। वाचस्पति गुरु त्रिलोचनक आश्रममे शिक्षा लैत छथि आ गुरुकन्या भामतीसँ हिनकर विवाह होइत अछि। वाचस्पति ब्रह्मसूत्रक मूल भावना पर टीका लिखबाक कार्य आरम्भ करैत छथि, जाहिमे हुनका अठारह वर्ष लागि गेलनि। एहि दीर्घ कालखण्डमे भामती पूर्ण मौन रहि क' स्वामीक सेवा करैत छथि – दीपमे तेल भरि बाती उकसा दैत छथि, भोजनक सरंजाम करैत छथि, आ अपन सन्तान–सुखसँ वंचित रहि जाइत छथि। उपन्यासक एकटा मार्मिक दृश्यमे लेखिका लिखैत छथि : ''लुक–लुक साँझ भेल जाइ छै। स्वामी पोथी पर आँखि गाड़ने छथि। भामती केँ कर्तव्यक बोध भेलनि। दीपमे तेल भरि बाती उकसा देलनि, स्वामीक मुखमंडल चमकि उठलनि।''[4]

भामतीक दैनंदिनी काज सभ सामान्य घरेलू काजसँ आरंभ होइत अछि, मुदा तकरा अतिरिक्त अन्तर्जगतक गहराइ धरि फैलैत अछि।

''कार्तिक मासक बीच दुपहरिया छलै। घरैतिन चिनबार समटि, चुल्हि पझा देहरि पर ओंठगल छलीह। स्वामी केँ भोजन करा स्वयं ओही थारीमे कलउक' लेने छलीह।''[5]

ई साधारण दृश्य नै अहि–ई मैथिल नारीक अदृश्य श्रमक प्रतीक अछि।

कथानकक चरम–बिन्दु छैक टीकाक नामकरणक प्रसंग। जखन पोथी पूर्ण होइत अछि, वाचस्पति ग्राम सभाक समक्ष घोषणा करैत छथि :–

''भामतीक हृदयमे क्लेश छनि जे ओ एहि पंडित वंशक सूत्र आगाँ बढ़ेबामे सक्षम नहि भेलीह। अपराध हमर अछि। शमन हमहीं करब। सन्तान किंवा पुत्र कएटा पीढ़ी धरि सूत्र बनौने रहैत छैक ? ओ कालदोष सँ विच्छिन्न भए जाइत छैक। हम भामतीकेँ यावच्चन्द्र–दिवाकरक अमर रहक सूत्र दैत छियनि सन्तानक रूपमे–अहि टीकाक नामकरण करैत छी 'भामती' टीका।

''भामती अकचकाय पति दिशि तकलनि, सनातन चरण गहि लेलथिन्ह, सौदामिनीक ऑखि नोरा गेलनि। सभासँ साधु–साधुक गुंजार होमय लगलैक। वरिष्ठ जन उठि आशीष देमय लागलथिन्ह– ''वाचस्पति–भामती अहाँक कीर्ति, अक्षुण्ण रहत। संगहि अहाँ दूनूक परस्पर समर्पण–भाव उदाहरण रहत मिथिला भूमिमे। युग–युग जीबधु अहाँक सन्तान।''[6]

**चरित्र–चित्रण**

भामती–उपन्यासक केन्द्रीय पात्र छथि। हुनक व्यक्तित्व त्याग, धैर्य, प्रेमसँ भरल अछि। हुनक व्यक्तित्वक गठन त्याग, सहनशीलता, प्रेम, धैर्य आ आत्मबल मिश्रणसँ भेल अछि। ओ अपन जीवनक निजी इच्छाकेँ अपन पतिक साधनाकेँ समर्पित करैत छथि। 'भामती' उपन्यासक प्रस्तावनामे लेखिका लिखैत छथि – ''पं. वाचस्पति मिश्र विवाह कए पत्नीकेँ लय आनने रहथि। अपना हुलासमे सभटा बिसरि गेलाह आ लागि गेलाह द्वैत–अद्वैतक विभेद करयमे। दर्शन षडदर्शन केर घूर्णित जलमे घुरमुरिया खाइत अठारह वर्ष बिता क' पोथी पूर्ण कयलनि। कथा छैक, जे हुनकर धर्मपत्नी भामती हुनकर भोजनादि केर व्यवस्थापकक अतिरिक्त सदा साकांक्ष रहैत छलथि, जे कतहु दीप नहि मिझा जाइक। ओ अहर्निश जागि कय दीपमे तेल आ बाती बदलैत रहलीह। कोनो लेखक पत्नीक लेल ई अत्यंत कठिन आ दुर्लभ काज करब थिक। आगाँ कथा रोचक आ मार्मिक छैक। वाचस्पति पोथी पूर्ण कयलनि, दीपक टेमी उसकबैत पत्नीक झोखरल हाथ देखि चौंकि उठलाह हाथक सूत्र धए दृष्टि, मुख पर पड़लनि। के छथि ई गतयौवना, की करैत छथि हमरा घरमे? षडदर्शनाचार्यकेँ ने अपन अठारह वर्षक भोजनादि व्यवस्थाक मूल मोन छनि ने दीपक ठोस उपस्थिति, नइ तेल आ नइ बातीक महत्ताक भान छनि ने ओकरा सतत ज्वलनशील बनौने रहयबालीक साधनाक ज्ञान छनि। ओ सुधि–बुधि बिसरि क' पुछैत छथि जे ''अहाँ के?'' स्त्री कहैत छथिन–'हम अहाँक पाणिग्रहीता धर्मपत्नी भामती। आ ओ कानय लागैत छथि। ओ पुछैत छथि–''कनैत किएक छी?'' किएक तऽ अहाँक कुल हमरासँ नहि चलत।''[7] जखन वाचस्पति टीका पूर्ण करैत छथि, हुनका

एहि कथाक अनुभव होइत अछि जे हुनक पत्नी हुनका लेल कतेक बलिदान देलनि अछि। ओ टीकाक नाम 'भामती' राखैत अछि।

**वाचस्पति मिश्र–** वाचस्पति मिश्र भारतीय दर्शनक महान आचार्यक रूपमे विख्यात छथि। वाचस्पति एक दार्शनिक, साधक आ विद्वान छथि। हुनक संपूर्ण जीवन ज्ञान साधनामे समर्पित अछि। वाचस्पति मिश्रक चरित्र एहि बातकेँ स्थापित करैत अछि जे महान साधना सेहो मानव–संबंध बिना अधूरा रहैत अछि। उपन्यासमे हुनक बौद्धिक ऊँचाईक संग मानवीय निर्भरता सेहो देखायल गेल अछि। ई चरित्र एहि बिन्दू पर महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जे ज्ञानक यात्रा एकाकी नहि, सामूहिक सहयोगसँ सम्पन्न होइत अछि।

**सौदामिनी–** भामतिक विपरीत आ आधुनिक दृष्टिसँ सौदामिनी एकटा महत्वपूर्ण पात्र छथि। ओ दशम शताब्दीक मिथिलाक ग्रामीण बालिका थीक, जकर वज्रयानी तान्त्रिक सभ छल–कपट सऽ अपहरण क' लैत छथि। ओ किएक तँ भागि क' अपन जीवन बचबैत छथि, तखनहि आयुर्वेद–चिकित्साक शिक्षा ग्रहण क' वैद्य बनैत छथि। हुनक कथा भामतीक समर्पण कथाक विरुद्ध एकटा प्रतिवादी स्वरक रूपमे विकसित होइत अछि। वैद्यकीक शिक्षा ल' क' संघाराममे रहि क' ज्ञान–दान करए वाली ई नारी बौद्ध परम्परासँ जुड़ल अछि। ग्रामीण लोक हिनका कहैत छथि–''साक्षात सरस्वती जकाँ विराजमान छलीह सौदामिनी।''– गामक चौपारि पर बैसि कए संघाराम सँ घुरलाहा लोकसभमे सँ एक गोटे बजलाह। ''ष्वेत वस्त्र सज्जामे, अहा!''– दोसरे गोटे छलाह। ''ततेक ने गम्भीर शिक्षिका छथि जे हमरा लोकनि ओतेकाल ठाढ़ रही एको बेर दृष्टि निक्षेप नहि कएलन्हि।'' ''बौद्ध लोकनि बुझथु जे हमर कन्या केहन विदुषी छथि।'' ''केहन मौलिक छथि।'' ''केहन निर्लिप्त आ मनस्विनी छथि।''[8]

**सुलक्षणा –** वाचस्पतिक मिश्रक बहिन सुलक्षणा उपन्यासक तेसर महत्वपूर्ण नारी–पात्र छथि। ओ विदुषी छथि, ज्ञानार्जनक इच्छा रखैत छथि। एहन भामती–सौदामिनी–सुलक्षणाक त्रिकोण नवम शताब्दीक मैथिल नारीक तीन संभावनाकेँ अंकित करैत अछि।

**भालोपीसी** – मिथिलाक ग्रामीण नारीक जीवन्त प्रतिनिधि थिकीह। हुनका माध्यमसँ लेखिका मिथिलाक लोक–जीवन, मुहावरा, रीति–रिवाज आ नित्य व्यवहारक चित्रण सेहो कएने छथि।

**पंडित त्रिलोचन–**भामतीक पिता, वाचस्पतिक गुरु– पंडित त्रिलोचन उपन्यासक विद्वत–परम्परा प्रतीक थीक।

**स्त्री–विमर्श**

उपन्यासक केन्द्रीय प्रश्न ई अछि–ज्ञानक स्वामित्व केकरा छल? लेखिका प्रस्तावनामे स्वयं लिखैत छथि–''मैथिल बेटी कला कौशलसँ अपनाके सम्पन्न राखैत गेलि, युग–युगान्तर पार होइत रहलैक, बीतैत रहलैक। मैथिल कला विकसित होइत रहलैक तहिना औषधि, वनौषधि केर ज्ञान स्त्रीगणकेँ छलैन्ह जे पीढ़ी दर पीढ़ी अबैत रहलैन्ह।

मैथिल संस्कृति, कला–कौषल सभटा स्त्रीगणक हाथमे रहलैन्ह; जे बाँचल अछि तकर श्रेयसी ओएह छथि जे बूड़ि गेल तकर अपयश पितृ–समाजकेँ छन्हि।[9]

आ आगाँ –

''कन्याकेँ आश्रम सँ की पाठशाला सँ सेहो निकालि शीघ्र विवाह क' फरागति पयबाक एकटा कारण भेटि गेल। स्त्रीगणक राह–बाट प्रकाश सँ अन्धकार दिस बढ़ि गेल।''[10]

नारीक स्वर्णिम अतीतक स्मरण करैत लेखिका प्रस्तावनामे लिखैत छथि–शंकर आ मंडनक शास्त्रार्थक जीवन्त चर्च युग युगान्तर पार करैत, भौगोलिक सीमा पार करैत वातावरणमे व्याप्त अछि। कथा जे भारती मंडन मिश्रक अर्धांगिनी शास्त्रार्थ केर जज छलीह। ओएह निर्णायक छलीह। निर्णायक जज कोनो मूर्खा स्त्री नहि भए सकैत छथि। ओ विदुषी कहल गेल छथि। शास्त्रार्थक एकटा पैघ अवधि छलैक, जेना दन्तकथा छैक भारती पतिक हारि जाएक क्रममे अर्धांगिनी होइत स्वयं वाद–विवादमे सम्मिलित भए गेलीह। कथा जे छैक से सर्वज्ञात छैक। हमर मूल प्रश्न मोनक छल जे मात्र डेढ़ सय वर्षमे कोन एहन विपत्ति पड़लैक मिथिलामे जाहिसँ एहन अन्धकार पसरि गेलैक जकर उदाहरण वाचस्पति आ भामती छथि।''[11]

उपन्यासकारक स्त्री–शिक्षाक प्रति आक्रोशकेँ निम्न पंक्तिमे देखल जा सकैत अछि–''स्त्री शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिला शून्य भ' गेल तकर घोर दुष्परिणाम भेल। मिथिलामे उच्चवर्गहु मूर्ख संतानक ढेरी लागि गेल।.... अशिक्षाक बिहाड़ि मे ओ लोकनि कतय जा खसली?.... के कएलकैन्ह शिक्षासँ वंचित हिनका? की घरमे रहबाक अधिक आवश्यकता? की अनायास बढ़ैत दकियानूसी? तँ दकियानूसी किएक।[12]

**भाषा–शैली**

उषाकिरण खानक भाषा मिथिलाक माटिक गंध धारण काएल अछि–तिरहुतक जनजीवनक शब्द (घैलची, सोहारी कटिया, चूल्हि, तुलसी चौरा, अरिपन, कोहबर) उपन्यासकेँ प्रामाणिकता दैत अछि। संवादमे मैथिलीक प्रामाणिक बोली–छटा अछि।

**लोक–जीवनक दृश्य–**''कने काल ओई सन्यासीक आयु आ रूप–स्वरूपक चर्च चललै, फेर सभ अपन–अपन घैल भरि घरे–घर विदा भेलीह। घैलची पर घैलि राखि ओ ठाढ़िये भेल छलीह कि रूदल गोपक बेटा सोनमा कटिया भरि दूध नेने जूमि गेलैक।

स्वामीक लेल एक कटिया दूध रूदल नित्य नियमसँ पठबै छैक। रातिमे गरम दूधमे गूरल सोहारी खाइत छथि पंडित, दिनमे भात–तीमन संगे दही अवश्य खएताह। भामती दूध ल' माटिक कड़ाहीमे उझिलि देलनि। ... देहरि

पर ओछाओल खाट पर भामती कुकुरक निन्ने सुतै छथि आ बिलाड़िक निन्ने जगैत छथि।''[13] लेखिका ऐतिहासिक कथाकेँ पुरातत्व–विवरण नहि, जीवन्त लोक–चित्र बनबैत अछि।

## निष्कर्ष

उषा किरण खानक 'भामती' मैथिली उपन्यासक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक। ई रचना एक दिस ऐतिहासिक पात्रक पुनर्पाठ करैत अछि त' दोसर दिस स्त्री–समर्पण, प्रेम, दाम्पत्य–सम्बन्ध आ ज्ञानक सामाजिक आधार पर गम्भीर विमर्श प्रस्तुत करैत अछि। उषा किरण खानक 'भामती' मैथिली साहित्यक एहन रत्न अछि, जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कए मैथिलीकेँ राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान केलक। ई उपन्यास एकटा प्रेम–कथा नहि, बल्कि ई पूरा मिथिलाक सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक गौरव, दार्शनिक गहनता ओ स्त्री–सशक्तिकरणक विविध पक्षकेँ समेटने अछि।

## संदर्भ :

1. खान, उषा किरण, 2017 ई. (द्वितीय संस्करण), भामती अविस्मरणीय प्रेम कथा, षेखर प्रकाषन, पटना, लेखक परिचय अन्तिम पृष्ठ।
2. वैह
3. वैह, प्रकाषन–विवरण पृष्ठ।
4. वैह, पृष्ठ 14
5. वैह, पृष्ठ 9
6. वैह, पृष्ठ 189
7. वैह, पृष्ठ–प्रस्तावनासँ
8. वैह, पृष्ठ 94
9. वैह, पृष्ठ–प्रस्तावनासँ
10. वैह, पृष्ठ–प्रस्तावनासँ
11. वैह, पृष्ठ–प्रस्तावनासँ
12. वैह, पृष्ठ–प्रस्तावनासँ
13. वैह, पृष्ठ 15